एड्स

खतरा चुम्बन से भी

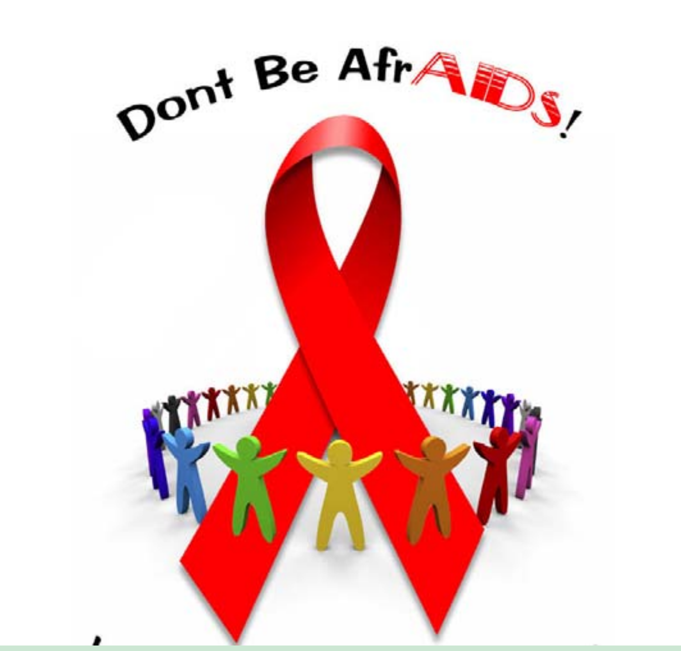

सरकार विज्ञापन में एड्स की रोगथाम के लिये केवल कंडोम को प्रमोट कर रही है अन्य जानकारी क्यों नहीं ?

इन्दौर :एच.आई.वी. या एड्स एक असाध्य, कष्टकारी और संक्रामक रोग है. एक बार इसकी गिरफ्त में आने के बाद रोगी की मौत सुनिश्चित होती हैं, क्योंकि जीवन के हर कदम पर उपेक्षा, तिरस्कार, अपमान और घृणा से उसे दो-दो हाथ करना पड़ता है. परिवार के लोग ही उस घर से निकाल देते हैं. अस्पतालों में हर तरफ से उपेक्षा, स्कूलों से निकाला जाना यहां तक कि जिन्दा दफनाने के प्रकरण भी पढने सुनने को मिलते है.

सन् १९८६-८७ में इस रोग ने भारत में पहला कदम रखा था और सन् २००६ के अंत तक लगभग ५७ लाख एच.आई.वी./एड्स के रोगी होने की बात बताई गई थी. अनेक वर्षो से नेशनल एड्स कन्ट्रोल आर्गेनाईजेशन इस रोग के विस्तार को रोकने के लिये प्रयास कर रहा है. अब तक कई हजार करोड़ रूपए बचान के उपाय में इस संगठन द्वारा खर्च कर डाले है.

वैज्ञानिकों के मुताबिक इसके विषाणु (वायरस) रोगी के शरीर में सभी द्रवों- रक्त,वीर्य, योनिद्रव, लार, पसीने और आँसू आदि में पाये जाते है. इसके वायरस का आकार १०० नैनोमीटर होता है, जिसका अर्थ है कि एक सेन्टीमीटर (आधा इंच से भी कम जगह) में इसके १० लाख वायरस समा सकते हैं. अर्थात इसके प्रवेश के लिये सूक्ष्मतम छिद्र भी काफी होता है. सुई की नोक बराबर छिद्र के जरिए हजारों की संख्या में वायरस एक साथ प्रवेश कर सकते है.

मुँह में इन कारणों से होती है वायरस की पूरी संभावना- यह सच है कि कुपोषण से भारत की लगभग आधी जनसंख्या पीडित है. कुपोषण के अंतर्गत विटामिन बी ग्रुप और सी की कमी के कारण मुँह में छाले और मसूड़ों में सूजन होने की संभावना सर्वाधिक रहती है. दाँतों में सड़न की समस्या भी भारत में बहुतायात में है. इण्डियन डेंटल एसोसिएशन और कालगेट कंपनी के मुताबिक देश के हर दूसरे व्यक्ति के दाँतों में सड़न की शिकायत है. गले मे खराश, टांसिलाइटिस, जुकाम जैसी बीमारीयाँ समस्या भी भारत में काफी आम है. तेज मसाले दार खाना, चाट-पकोड़े, समोसे-कचोरी जैसेतीखे आयटम खाने के शौकीन भी हमारे देश में कुछ ज्यादा ही हैं. चूने-कत्थे का पान, तमाकू, गुटका, पान मसाला, पान बहार, सुपारी बीड़ी-सिगरेट, शराब का सेवन तथा गरम चाय-काफी भी हमारे देश के लोग खाते-पीते हैं. इन सबसे मुँह की झिल्ली (म्यूकस मेम्ब्रेन) सूक्ष्म और स्थूल रूप से क्षतिग्रस्त होती है.

मुँह से फैलता है एड्स

टेक्सास (यू.एस.ए.) के डाँ मार्क निकालस के अनुसार एच.आई.वी./एड्स के संक्रमण के प्राथमिक लक्षण बहुधा मुँह में ही प्रकट होते है. यही वजह है कि दंत-चिकित्साकों को इस मामले में सदैव सजग रहने को कहा जाता है और उसके उपकरणों को स्टरलाईज (कीटाणु विहीनीकरण) करने के लिए विषेष ध्यान रखा जाता है. अमेरिका में रोगी की लार से एच.आई.वी. की उपस्थिति देखने का चलन है, जिसे यूनाइटेड स्टेट्स फूड्स एण्ड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन ने प्रामाणिकता प्रदान की है. डेनियल क्यू हेनी के मुताबिक कापोसी सारकोमा नामक कैंसर जो कि एड्स रिलेटेड वाईरस से होता हैं, यह चुम्बन से फैलता है. उन्होंने लिखा है कि -*एड्स रिलेटेड वायरस स्प्रेड्स थ्रु कीसिंग* डाँ. जॉन पॉक के अध्ययन के अनुसार समलैंगिक रोगियों की लार में गुदा और यौनांगों की तुलना में ३० प्रतिशत अधिक रोगाणु पाए गए.

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के तत्कालीन महानिदेशक डाँ. अवतारसिंह पेंटल ने इंडिया टुडे (३१ जुलाई १९८८)को दिये गये साक्षात्कार में स्पष्ट कहा है कि यदि चुम्बन तगड़ा हो अथवा आपके मसूड़े जख्मी हो,तो चुम्बन लेता है तो असंक्रमित व्यक्ति के मुँह में वायरस निश्चित रूप से पहुँच जाते हैं. यदि छाले,सड़न, सूजन,कट और दरार या कोई सूक्षमतम छिद्र मुँह,जीब, मसूड़ों, टांसिल्स, होठों आदि में हुआ तो हजारों की तादाद में वायरस शरीर में पहुँच जाते है. एक बार भीतर पहुँचने पर रक्त के ग्लूकोज आदि पोषक तत्वों की उपस्थिति में इनकी संख्या निरंतर बढती जाती है. बीमारी के लक्षण प्रकट होने में भले ही चार-पाँच सप्ताह से पांच-दस साल लग जाएं मगर जीत तो एच.आई.वी/एड्स के रोगाणुओं की ही होती है.

चुम्बन पर चुप्पी नहीं साफ-साफ बताइए

नाको अपने अखबारी विज्ञापनों तथा अन्य प्रचार माध्यमों में चुम्बन के विषय में स्पष्ट जानकारी नहीं देता है. चुम्बन के विषय में जानकारी नहीं होने से आम नागरिक ही नहीं वरन उच्च शिक्षित लोग भी चुम्बन को हर स्थिति में निरापद मानते हैं क्योंकि एड्स से संपूर्ण सुरक्षा के लिए कण्डोम का ही जोरदार प्रचार किया जाता है.

नाको ने चुम्बन के विषय में जो भी रवैया अख्तियार कर रखा है, वह अनजाने में किया गया कृत्य नहीं हैं. नाको ने एक कदम और निर्भीकता से इसी दिशा में बढाते हुए चुम्बन के विषय में देश के स्वास्थ्य कार्यक्रमों से जुड़े तीन स्तर के लोगों को अपने ट्रेनिंग माड्यूल्स में तीन अलग अलग तरह के विवरण दिए हैं. एच.आई.वी./एड्स तथा यौन संक्रमित रोगों से बचाव एवं नियंत्रण पर स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं एवं पर्यवेक्षकों हेतु प्रशिक्षण-संदर्शिका के पृष्ठ क्रमांक-१३ में लिखा है कि -*संक्रमित व्यक्ति का आंलिगन अथवा चुम्बन करने से एच.आई.वी. नहीं फैलता.*

यह बात अत्यन्त मायने रखती है कि स्वास्थ्य कार्यकर्ता घर-घर गांव-गांव जाकर अनपढ, नवसाक्षर और साक्षर ग्रामीणों तथा गरीब बस्तियों के लोगों को